



भारतीय राजनीति में महिला सहभागिता : जिला आगरा के विधानसभा चुनाव(2022) एवं लोकसभा चुनाव(2024) के विशेष संदर्भ में

¹चन्द्रशेखर यादव, ²डॉ. अंजू शर्मा

¹शोधार्थी, ²असिस्टेंट प्रोफेसर

¹समाजशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान विभाग,

¹दयालबाग (टू बी डीमड यूनिवर्सिटी) शिक्षण संस्थान, आगरा, भारत(India)

सारांश : यह शोध पत्र भारतीय राजनीति में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता पर केंद्रित है। भारत में महिलाओं ने पितृसत्तात्मक संरचनाओं, सांस्कृतिक मानदंडों और आर्थिक बाधाओं के कारण कई चुनौतियों का सामना किया है। प्राचीन काल में जहां महिलाओं की राजनीतिक सभाओं में भूमिका थी, वहीं मध्यकालीन युग में सामाजिक चुनौतियों ने उनकी भूमिकाओं को सीमित कर दिया। आधुनिक समय में महिलाओं ने राजनीतिक क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण प्रगति की है। सरोजिनी नायडू, इंदिरा गांधी और वर्तमान में राष्ट्रपति के रूप में द्रौपदी मुर्मू जैसी महिला नेताओं के उदाहरण यह दर्शाते हैं कि भारतीय राजनीति में महिलाओं का प्रभाव कितना महत्वपूर्ण हो सकता है। हालांकि, आगरा और अन्य निर्वाचन क्षेत्रों में चुनाव परिणाम और महिला सहभागिता दर को देखते हुए यह स्पष्ट है कि उनका समग्र प्रतिनिधित्व सीमित ही रहा है। इस अध्ययन में, आगरा में विधायी और संसदीय चुनावों में महिलाओं की कम सहभागिता के कारणों का विश्लेषण किया गया है। मतदाता टर्न-आउट, प्रत्याशियों के आंकड़े और चुनावी परिणामों का विश्लेषण करते हुए यह अध्ययन उन बाधाओं पर प्रकाश डालता है, जैसे कि राजनीतिक दलों की पूर्वाग्रहता और सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएं, जो महिलाओं को समान भागीदारी से रोकती हैं। इन चुनौतियों और वर्तमान नीतियों का आकलन करते हुए, यह शोध पत्र भारत में लिंग-समान राजनीतिक परिदृश्य को बढ़ावा देने के तरीकों की समझ को बढ़ावा देने में योगदान देता है।

मुख्य शब्द - महिला सहभागिता, चुनाव, मतदाता टर्न-आउट, पितृसत्तात्मकता, प्रतिनिधित्व, पूर्वाग्रहता।

प्रस्तावना:

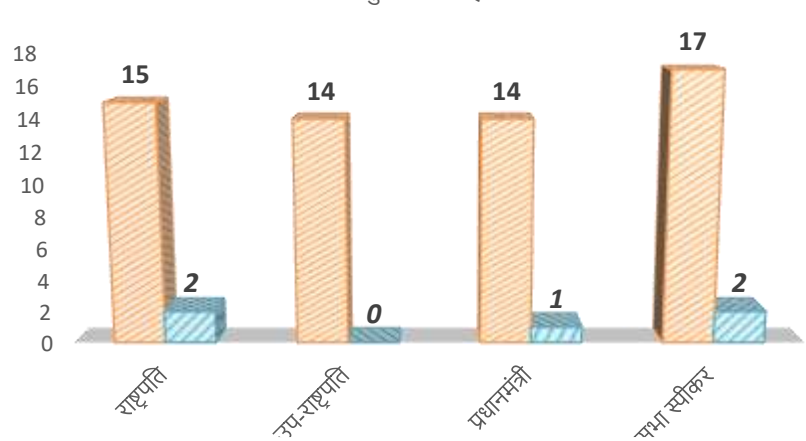
किसी भी देश की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी उस देश में लोकतंत्र की समृद्धि और सामाजिक समावेशन का प्रतीक है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर वर्तमान राजनीति तक महिलाओं ने विभिन्न आंदोलनों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष में बेगम हजरत महल, रानी लक्ष्मीबाई, भीकाजी कामा, एनी बेसेंट, सरोजिनी नायडू, विजय लक्ष्मी पंडित आदि के नाम स्मरणीय हैं। आजादी के बाद भारत में कई प्रभावशाली महिला नेताओं ने देश की राजनीति को आकार दिया है। सरोजिनी नायडू पहली महिला राज्यपाल बनीं और विजय लक्ष्मी पंडित संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली महिला अध्यक्ष रहीं। इंदिरा गांधी, जो भारत की पहली और एकमात्र महिला प्रधानमंत्री रहीं, ने 1971 के भारत-पाक युद्ध जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं में देश का नेतृत्व किया। ममता बनर्जी, जयललिता और मायावती जैसी क्षेत्रीय नेता भी अपने-अपने राज्यों में राजनीति को नए आयाम देने में सफल रहीं। सुषमा स्वराज, जिन्होंने विदेश मंत्री के रूप में अपनी कुशलता से दुनिया भर में भारतीयों की सहायता की और सोनिया गांधी, जिन्होंने कांग्रेस का नेतृत्व किया, का योगदान अमूल्य रहा। प्रतिभा देवी पाटिल भारत की पहली महिला राष्ट्रपति बनीं। मीरा कुमार, जो पहली महिला लोकसभा

अध्यक्ष बनीं एवं निर्मला सीतारमण, जो वर्तमान में वित्त मंत्री हैं, ने भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका को मजबूत किया है। द्रौपदी मुर्मू, आदिवासी समूह से निकलकर राष्ट्रपति के पद पर आसीन हैं। इन सभी नेताओं ने राजनीति में लैंगिक सीमाओं को तोड़ा, बदलाव की प्रेरणा दी और भारतीय लोकतंत्र को सशक्त किया।

स्वतंत्रता के उपरांत संविधान के लागू होने के क्रम में महिलाओं को सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार प्राप्त होने के बाद भी भारत में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता अपेक्षित स्तर तक नहीं हो पाई है। भारत में 2024 के आम चुनाव तक 96.88 करोड़ लोग निर्वाचक नामावली में हैं जिसमें से 47.15 करोड़ महिला निर्वाचक हैं (भारत निर्वाचन आयोग, 2024)। महिलाओं की निर्वाचक नामावली में 48.66% हिस्सेदारी होने के बाद भी इन्टर पार्लियामेंटरी यूनियन की रिपोर्ट बताती है कि 2025 की शुरुआत में भारतीय संसद में महिलाओं की भागीदारी 13.8% थी, जो वैश्विक औसत 27.2% से काफी कम है (इन्टर पार्लियामेंटरी यूनियन, 2025)।

आजादी के 78 वर्ष पूरे करने के बाद भी भारतीय लोकतंत्र में विभिन्न संवैधानिक पदों पर महिलाओं की पहुँच अतिअल्प है। स्वतंत्रता उपरांत भारत में अब तक 15 राष्ट्रपति हुए हैं जिसमें केवल 2 महिलाएँ हैं। वहीं भारत के 14 उपराष्ट्रपतियों में एक भी महिला उपराष्ट्रपति पद तक नहीं पहुँच पाई है। दूसरी ओर भारत के 14 प्रधानमंत्रियों में केवल एक महिला प्रधानमंत्री का होना तथा भारतीय लोकतंत्र की आकांक्षा को प्रदर्शित करने वाले भारतीय संसद के निम्न सदन लोकसभा में लोकसभा स्पीकर के रूप में अब तक चयनित हुए 17 व्यक्ति में केवल 2 महिलाओं का निर्वाचन विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के समक्ष समतामूलक राजनीतिक सहभागिता के मूल्य पर पुनर्विचार का प्रश्न उत्पन्न करता है (आरेख 1)।

आरेख 1 : भारत के प्रमुख संवैधानिक पदों पर लैंगिक प्रतिनिधित्व



SOURCE: www.india.gov.in; vicepresidentofindia.nic.in; www.presidentofindia.gov.in

साहित्यिक पुनरावलोकन:

- **राय (2017)** ने कहा है कि 1990 के दशक में शुरू हुआ महिला वोटर्स का चुनाव में तीव्र सहभागिता 2014 में अपनी शीर्ष पर पहुंच गई और इसके जारी रहने की संभावना है। 2014 तक पुरुष और महिला मतदाताओं के मतदान में अंतर घटकर 1.5 प्रतिशत रह गया है। यह घटना लिंग-अंतर स्थापित करता है कि अधिक महिलाएं अपने चुनावी अधिकारों का प्रयोग कर रही हैं। इसी तरह, 1999 और 2014 के बीच चुनाव अभियानों में महिलाओं की भागीदारी काफी बढ़ गई।
- **वर्गीज (2020)** ने अपने शोध पत्र में कहा है कि भारत में आजादी के बाद महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता के लिए बहुत से प्रयास हुए हैं और केरल में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता भारत में सर्वाधिक है। इसके बाद भी महिलाओं को सांस्कृतिक, पितृसत्तात्मक, आर्थिक आदि कारणों से अलगाव का सामना करना पड़ता है। जिसके समाधान के लिए राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर नीति बनाने की आवश्यकता है।
- **पटेल (2023)** में अपने शोध पत्र में समझाया है कि सभी राजनीतिक दलों की महिला राजनीतिक कार्यकर्ताओं की अपनी सोच होती है, लेकिन राजनीतिक नेतृत्व चुनाव लड़ने के लिए सीटें आवंटित करते समय अपनी पार्टी की अनुभवी महिला राजनीतिक कार्यकर्ताओं को बढ़ावा नहीं देते। अधिकांश राजनीतिक दलों ने अपनी महिला कार्यकर्ताओं का इस्तेमाल केवल पैदल सैनिकों के रूप में किया है। महिलाओं द्वारा सामना किए गए ऐतिहासिक अन्याय के लिए एक सकारात्मक कार्रवाई के रूप में संसद, विधानसभा और राज्य सरकारों की विधान परिषदों में महिलाओं के लिए आरक्षण चुनावी राजनीति में महिलाओं के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने का एकमात्र तरीका है।
- **कुसुमा (2024)** ने कहा है कि यद्यपि महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, फिर भी भारतीय राजनीति में महिलाओं की समान और सार्थक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए अभी भी काम किया जाना बाकी है। राजनीति में लैंगिक समानता प्राप्त करना न केवल न्याय और लोकतंत्र का मामला है, बल्कि शासन की प्रभावशीलता को बढ़ाने और लिंग की परवाह किए बिना सभी नागरिकों की जरूरतों और दृष्टिकोणों को संबोधित करने का एक

साधन भी है। चुनौतियों का समाधान करके और सफलताओं पर निर्माण करके, भारत एक अधिक समावेशी और प्रतिनिधिक राजनीतिक परिदृश्य के करीब पहुंच सकता है।

- **इन्टर पार्लियामेंटरी यूनियन की वुमन इन पार्लियामेंट : 1995-2025 रिपोर्ट** बताती है कि पिछले तीन दशकों में राष्ट्रीय संसदों में महिलाओं की भागीदारी 11.3% से बढ़कर 27.2% हो गई है। 2024 में हुए 73 संसदीय चुनावों के बावजूद, महिलाओं की भागीदारी में केवल 0.3 प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई। भारत में भी 1995 की तुलना में लोकसभा में महिलाओं की सहभागिता 7.2% से बढ़कर 2025 में 13.8% हो गई है। राष्ट्रीय संसदों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व में भारत 168 देशों में 136वें स्थान पर है।
- **विश्व आर्थिक मंच की ग्लोबल जेंडर रिपोर्ट 2025** के अनुसार भारत लैंगिक सशक्तिकरण के विषय में 148 देशों में 131वें स्थान पर है, जिसमें वह अपने पड़ोसी देश जैसे-बांग्लादेश, चीन, नेपाल, श्रीलंका, भूटान से भी पीछे है।

शोध का महत्व:

आगरा क्षेत्र, भारतीय राजनीति का एक विशिष्ट प्रतिनिधित्व करता है जो समाज और राजनीतिक गतिशीलता का पारंपरिक स्थान है। साथ ही आगरा निर्वाचन क्षेत्र पर हुए शोध-पत्र का अभाव है, जिससे क्षेत्र में महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता के साथ उनकी राजनीतिक-क्षमताओं, नेतृत्व-क्षमता और सामर्थ्य का वास्तविक आकलन किया जा सकता है।

अनुसंधान पद्धति और अनुसंधान डिजाइन:

शोध पत्र **‘भारतीय राजनीति में महिलाएं : जिला आगरा के विधानसभा चुनाव(2022) एवं लोकसभा चुनाव(2024) के विशेष संदर्भ में’** की अनुसंधान समस्या द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। द्वितीयक आँकड़े शोध पत्रों, पत्रिकाओं, चुनाव आयोग, इंटरनेट और अन्य प्रामाणिक स्रोतों से एकत्र किया गए हैं। द्वितीयक आँकड़ों के संग्रह के बाद, इन्हें व्यवस्थित रूप से व्याख्यायित किया गया है। इस अध्ययन का अनुसंधान डिजाइन वर्णनात्मक सह व्याख्यात्मक है।

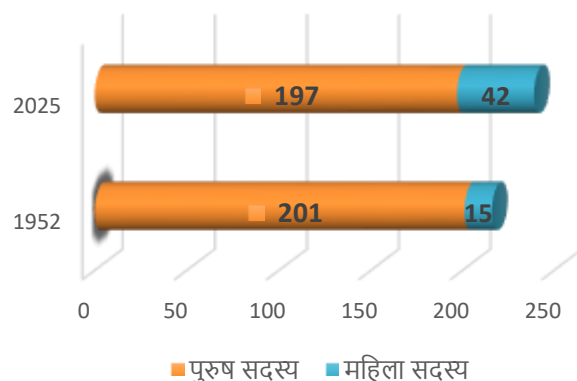
भारतीय संसद में महिला सदस्य:

भारत के संविधान का स्वरूप गणतंत्रीय तथा ढांचा संघीय है और उसमें संसदीय प्रणाली के प्रमुख तत्व विद्यमान हैं। इसमें संघ के लिये एक संसद का प्रावधान है जिसमें राष्ट्रपति और दो सदन अर्थात् राज्य सभा (काउंसिल ऑफ स्टेट्स) और लोक सभा (हाउस ऑफ दी पीपल) सम्मिलित है।

राज्यों की परिषद यानी राज्य सभा भारतीय संसद का ऊपरी सदन है। राज्य सभा में राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के प्रतिनिधि और भारत के राष्ट्रपति द्वारा नामित व्यक्ति शामिल होते हैं। भारत का उपराष्ट्रपति राज्य सभा का पदेन सभापति होता है। राज्य सभा की अधिकतम संख्या 250 निर्धारित करता है, जिसमें से 12 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं और 238 सदस्य राज्यों और तीन संघ राज्य क्षेत्रों के प्रतिनिधि होते हैं। 1952 में जब प्रथम बार राज्यसभा का गठन किया गया उस समय कुल सदस्य संख्या 216 की तुलना में राज्यसभा में केवल 15 महिलाएं थी जो अगस्त 2025 तक बढ़कर 239 कुल सदस्यों में से 42 महिलाएं हो गई हैं।

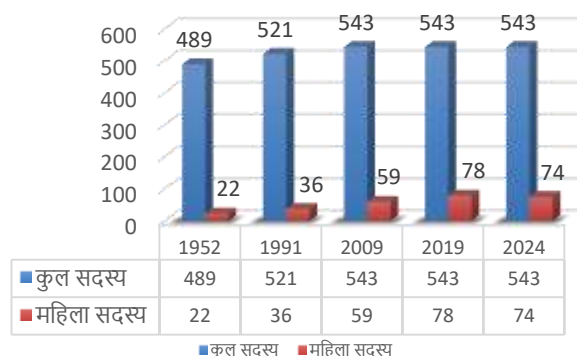
लोकसभा भारत की संसद का निचला सदन है, जिसे देश की जनता प्रत्यक्ष मतों से चुनती है। लोकसभा के सदस्यों का चुनाव फर्स्ट-पास्ट-द-पोस्ट प्रणाली के तहत होता है जिसमें उम्मीदवार को सबसे अधिक वोट मिलने पर जीत हासिल होती है। भारत में पहली लोकसभा के चुनाव 1951-52 में हुए थे। ये चुनाव अक्टूबर 1951 से फरवरी 1952 तक चले और ये स्वतंत्र भारत के पहले आम चुनाव थे। इस चुनाव में कुल 489 सीटें थीं जिसमें 22 (4.4%) सीटों पर महिलायें निर्वाचित हुईं। 18वीं लोकसभा का गठन 2024 के आम चुनावों के बाद हुआ। इस लोकसभा में कुल 543 निर्वाचन क्षेत्र हैं जिसमें 74 (13.6%) महिला सदस्य निर्वाचित हुई हैं(आरेख 3)।

आरेख 2 : राज्य सभा में पुरुष एवं महिला सदस्य



SOURCE : [Digital Sansad](#)

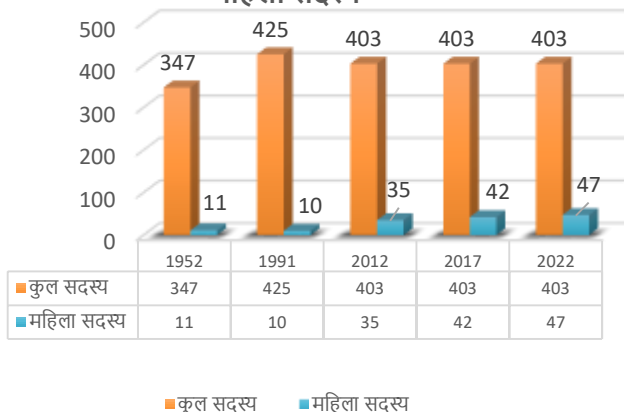
आरेख 3 : लोकसभा के कुल सदस्यों के सापेक्ष महिला सदस्य



SOURCE : [Digital Sansad](#)

उत्तर प्रदेश राज्य विधानसभा में महिला सदस्य

आरेख 4 : उत्तर प्रदेश विधानसभा के कुल सदस्यों में महिला सदस्य



Source: [\[Source Link\]](#)

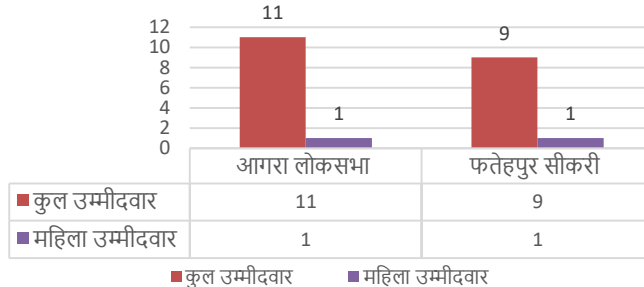
उत्तर प्रदेश राज्य में द्विसदनीय विधायिका है जिसमें विधान परिषद (उच्च सदन) और विधान सभा (निचला सदन) शामिल है। उत्तर प्रदेश विधान सभा की क्षमता एक मनोनीत एंग्लो-इंडियन सदस्य सहित 404 सदस्यों की थी, जिसमें 104वें संविधान संशोधन अधिनियम 2019 (25 जनवरी, 2020 को लागू) द्वारा एक एंग्लो-इंडियन सदस्य को नामित करने का प्रावधान समाप्त कर उत्तर प्रदेश की विधानसभा में वर्तमान सदस्य-संख्या को 403 कर दिया गया है। उत्तर प्रदेश की प्रथम विधान सभा 8 मार्च, 1952 को गठित हुई थी। उत्तर प्रदेश की प्रथम विधानसभा में 347 निर्वाचन-क्षेत्र थे जिसमें 11 (3.17%) महिला निर्वाचित हुईं। वर्तमान अठारहवीं विधान सभा का गठन 11 मार्च, 2022 को हुआ है। 18वीं विधान सभा में निर्वाचित 403 सदस्यों में 47 (11.62%) महिला सदस्य हैं (आरेख 4)।

आगरा जिले में विधानसभा चुनावों (2022) में महिला सहभागिता:

लोकसभा चुनाव (2024)

भारतीय संसद के निम्न सदन लोकसभा के 543 निर्वाचन क्षेत्रों में से आगरा जिले में 2 निर्वाचन क्षेत्र आते हैं, जिनके नाम निम्नलिखित हैं: 1) आगरा (18), 2) फतेहपुर सिकरी (19)। 2024 के लोकसभा चुनाव में इन दोनों लोकसभा क्षेत्र में 20 उम्मीदवारों ने निर्वाचन प्रक्रिया में सहभागिता की, जिसमें से केवल दो महिला उम्मीदवार थीं। दोनों लोकसभा क्षेत्रों में पुरुष उम्मीदवारों ने जीत अर्जित की। वहीं दोनों महिला उम्मीदवारों में से एक उम्मीदवार ने नोटा से भी कम मत प्राप्त किये। दोनों लोकसभा क्षेत्र में महिला वोटर टर्न आउट कुल वोटर टर्न आउट से कम रहा (आरेख 5)।

आरेख 5 : 2024 के लोकसभा चुनाव में कुल उम्मीदवारों के सापेक्ष महिला उम्मीदवार



Source : Election Commission Of India.

सारणी 1 : आगरा लोकसभा चुनाव (2022) में महिला सहभागिता

लोक सभा क्षेत्र	कुल उम्मीदवार	महिला उम्मीदवार	महिला उम्मीदवार का नाम	दल	कुल वोटर टर्न-आउट	महिला वोटर टर्न-आउट
आगरा	11	01	पूजा अमरोही	बहुजन समाज पार्टी	54.08%	51.29%
फतेहपुर सिकरी	09	01	संगीता तौमर	भारतीय मजदूर जनता पार्टी	57.19%	55.01%

Source : Election Commission Of India.

सारणी 6 : आगरा लोकसभा चुनाव (2022) में महिला उम्मीदवार

महिला उम्मीदवार का नाम	दल	परिणाम	प्राप्त % मत	NOTA को % मत
पूजा अमरोही	बहुजन समाज पार्टी	हार	15.7%	0.62%
संगीता तौमर	भारतीय मजदूर जनता पार्टी	हार	0.14%	0.75%

Source : Election Commission Of India.

विधानसभा चुनाव (2022)

उत्तर प्रदेश विधान सभा के 403 निर्वाचन क्षेत्रों में से आगरा जिले में 9 क्षेत्र आते हैं। आगरा जिले में स्थित 9 विधानसभा क्षेत्रों में विधानसभा चुनाव (2022) में कुल 147 नामांकन दाखिल किए गए, जिनमें से महिलाओं की संख्या 13 रही। जिसमें से 4 प्रत्याशी निर्दलीय एवं 9 प्रत्याशी किसी दल से संबंधित रहीं। जिसमें से एक महिला प्रत्याशी ने अपना नामांकन वापस ले लिया, वहीं एक अन्य प्रत्याशी का नामांकन निरस्त हो गया। इन उम्मीदवारों में से केवल दो उम्मीदवारों ने ही जीत अर्जित की। वहीं 6 उम्मीदवार तो नोटा (NOTA) से भी कम मत प्राप्त कर सकीं। साथ ही सभी विधानसभा क्षेत्रों में से केवल **बाह** को छोड़कर सभी आठ विधानसभा क्षेत्र में महिला वोटर टर्न आउट कुल औसत वोटर टर्न आउट से कम रहा।

इस प्रकार देखें तो आगरा जिले के सभी 9 विधानसभा क्षेत्रों में 22.22 प्रतिशत भाग पर महिला प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया है, जो की जो कि राज्य विधानसभा में सहभागिता (11.66%) से अधिक है।

सारणी 3 : उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव (2022) में महिला सहभागिता

विधानसभा क्षेत्र	कुल नामांकन	महिला नामांकन	कुल मतदाता	महिला मतदाता	कुल वोटर टर्नआउट	महिला वोटर टर्नआउट
आगरा कैन्ट	16	02	467201	212469	53.93%	51.34%
आगरा उत्तर	15	00	435557	199480	55.29%	52.48%
आगरा ग्रामीण	11	02	427896	194403	61.07%	58.16%
आगरा दक्षिण	11	00	367502	168370	56.76%	52.65%
बाह	21	02	334525	150880	56.94%	59.23%
एत्मादपुर	15	01	444849	201585	67.60%	66.36%
फतेहाबाद	26	02	332495	147810	76.15%	66.74%
फतेहपुर सीकरी	16	03	359005	164152	67.87%	67.55%
खेरागढ़	16	01	328680	150011	62.47%	62.11%

Source : Election Commission Of India.

सारणी 4 : उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव (2022) में महिला उम्मीदवार

विधानसभा क्षेत्र	महिला नामांकन	महिला उम्मीदवार का नाम	दल	परिणाम	प्राप्त % मत	NOTA को % मत
आगरा कैन्ट	02	मोना सिंह	पीस पार्टी	हार	0.17%	0.056%
		आकाश सोनी	निर्दलीय	हार	0.14%	
आगरा उत्तर	00	कोई उम्मीदवार नहीं	----	----	----	0.67%
आगरा ग्रामीण	02	बेबी रानी मौर्य	भारतीय जनता पार्टी	जीत	52.63 %	0.46%
		किरण प्रभा किशोरी	बहुजन समाज पार्टी	हार	23.26%	
आगरा दक्षिण	00	कोई उम्मीदवार नहीं	----	----	----	0.45%
बाह	02	मनोज दीक्षित	इंडियन नेशनल कांग्रेस	हार	0.65%	0.96%
		रानी पक्षालिका सिंह	भारतीय जनता पार्टी	जीत	41.16%	
एत्मादपुर	01	शिवानी देवी सिंह	इंडियन नेशनल कांग्रेस	हार	0.44%	0.62%
फतेहाबाद	02	रूपाली दीक्षित	समाजवादी पार्टी	हार	25.77%	1.14%
		प्रमोद कुमारी कुशवाहा	निर्दलीय	हार	0.14%	
फतेहपुर सीकरी	03	संगीता	भारतीय मजदूर जनता पार्टी	हार	0.16%	0.66%
		हिना नाज़ शेखवानी	वंचित समाज इंसाफ पार्टी	हार	0.18%	
		मीरा	निर्दलीय	वापस	----	
		सुमन देवी	निर्दलीय	निरस्त	----	
खेरागढ़	01	सुमन देवी	निर्दलीय	निरस्त	----	0.64%

Source : Election Commission Of India.

परिणाम:

भारत की स्वतंत्रता से लेकर आज तक की स्थिति के आँकड़े देखें तो पता चलता है कि भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में कुछ प्रगति हुई है। लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 1952 के 4.4% की तुलना में 2024 तक 13.62% हो गया। वहीं उत्तर प्रदेश की विधायिका के निम्न सदन में यह 1952 के 3.17% से बढ़कर 2022 में 11.66% हो गया है।

➤ भारतीय राजनीति में महिलाओं का कम प्रतिनिधित्व

- महिलाओं का मतदाता सूची में 48.66% प्रतिनिधित्व होने के बावजूद, लोकसभा में महिलाओं के पास केवल 13.8% सीटें हैं जो 27.2% के वैश्विक औसत से काफी कम है।
- राष्ट्रीय संसदों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व के मामले में भारत 168 देशों में 136वें स्थान पर है।
- उत्तर प्रदेश की निर्वाचक सूची में 46.38% महिला हिस्सेदारी के बाद भी विधानसभा में महिला सदस्य 11.66% हैं।

➤ केस स्टडी: आगरा जिला (2022-2024 चुनाव)

लोकसभा चुनाव (2024):

- आगरा की दोनों सीटों पर 20 उम्मीदवारों में से केवल 2 महिलाएं थीं।
- दोनों महिला उम्मीदवार हार गईं; एक को NOTA से भी कम वोट मिले।
- दोनों निर्वाचन क्षेत्रों में महिला मतदाता मतदान पुरुष मतदान से कम रहा।

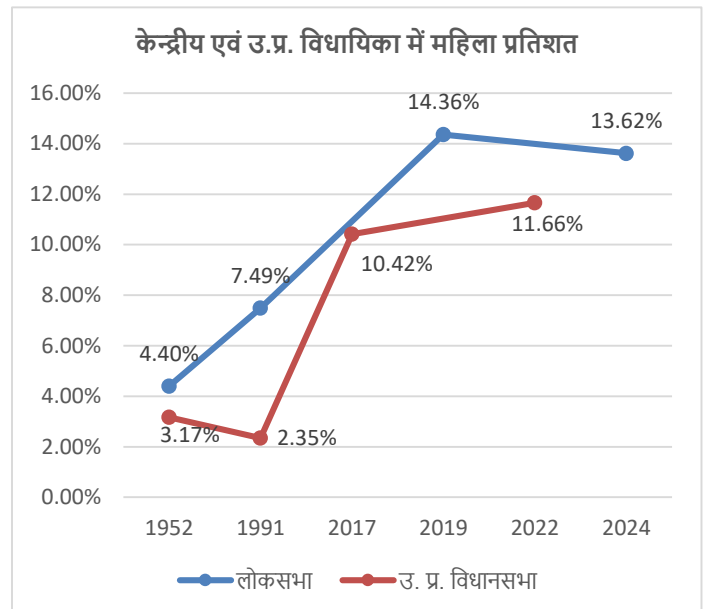
विधानसभा चुनाव (2022):

- 147 उम्मीदवारों में से केवल 13 महिलाएं थीं।
- केवल 2 महिलाएं जीतीं; 6 को NOTA से भी कम वोट मिले।
- 9 में से 8 निर्वाचन क्षेत्रों में महिला मतदान समग्र मतदान से कम रहा।

परिणामों से यह ज्ञात होता है कि भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में नारियों की अल्प-सहभागिता महिलाओं के राजनीतिक प्रक्रिया के प्रति कम रुझान एवं जागरूकता को प्रदर्शित करता है। अब महिलाएं मतदान देने में तो आगे आ रही हैं किन्तु एक उम्मीदवार के रूप में अपना नामांकन प्रस्तुत करने में अभी भी बहुत पीछे हैं। इसके अतिरिक्त महिलाओं के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए प्रभावी आरक्षण व्यवस्था का अभाव भी एक चुनौती है। जिसका स्वाभाविक परिणाम महिलाओं की राजनीति में अल्प-सहभागिता है।

महिला सहभागिता कम होने के कारण:

- भारत का संविधान पुरुषों और महिलाओं को समान मताधिकार देता है। फिर भी मौजूदा सामाजिक मूल्य, सार्वजनिक-निजी विभाजन, क्षेत्रीय पहचान और राजनीतिक संस्थानों में पुरुषों की प्रधानता महिलाओं की समान राजनीतिक भागीदारी में बाधा बनती है।
- प्रमुख निर्णय लेने वाले पदों पर महिलाओं का आलोचनात्मक और गुणात्मक प्रतिनिधित्व कम होने से महिलाओं के एजेंडे वाले मुद्दों का समाधान नहीं हो पाता।
- पुरुष और महिला जनप्रतिनिधियों के कार्यक्षेत्र और प्राथमिकताएं अलग होती हैं। महिला प्रतिनिधि शिक्षा, स्वास्थ्य, महिलाओं के खिलाफ हिंसा और बुनियादी सुविधाओं पर ध्यान देती हैं। पुरुष तात्कालिक लाभ वाले मुद्दों (सड़कें, सामुदायिक केंद्र, तालाब, पुल आदि) को प्राथमिकता देते हैं।



- महिला प्रतिनिधियों की संख्या कम होने से उन्हें वित्त, गृह, रक्षा, स्वास्थ्य जैसे मुख्य मंत्रालय नहीं मिलते। महिलाओं को अक्सर महिला एवं बाल विकास, सूचना एवं संस्कृति, सामाजिक कल्याण जैसे अल्प-महत्ववान मंत्रालय दिए जाते हैं।
- इंदिरा गांधी और मायावती जैसी प्रमुख महिला नेताओं ने अन्य महिलाओं के साथ अपनी लोकप्रियता साझा करने से परहेज किया।
- दलों में महिलाओं का अनुपात कम होने से वे अपने निर्वाचन क्षेत्रों को मजबूत करने और संसाधन जुटाने में कठिनाई का सामना करती हैं। इसके कारण उन्हें अक्सर कमजोर प्रतिनिधि माना जाता है और राजनीतिक नेता के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता। संख्या में कम होने के कारण महिलाएं जाति, धर्म और क्षेत्रीय पहचान पर आधारित गठबंधन बनाने को मजबूर होती हैं, बजाय समान लैंगिक हितों के।
- सार्वजनिक जीवन में महिलाएं अक्सर पुरुष-प्रधान विकास एजेंडे में शामिल हो जाती हैं।
- पंचायत स्तर पर महिलाओं के राजनीति में प्रवेश में गंभीर बाधाएं और हिंसा का विरोध देखा गया है।

निष्कर्ष:

भारतीय राजनीति में महिलाओं की सहभागिता स्वतंत्रता के बाद निश्चित तौर पर बेहतर हुई है। स्वतंत्रता की बाद पहली लोकसभा एवं 2024 की 18वीं लोकसभा की तुलना करें, तो लोकसभा में महिला सहभागिता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। किंतु आँकड़े बताते हैं कि देश की आधी आबादी का देश की राजनीति में पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं है। स्वतंत्रता के इतने वर्षों के बाद भी भारतीय राजनीति में महिला सहभागिता 15% से अधिक नहीं हो पाई है, वहीं क्षेत्रीय राजनीति में उत्तर प्रदेश में भी यह 15% से अधिक नहीं हो पाई है। आगरा के संदर्भ में भी देखें तो यहां महिला केंद्रित राजनीति का अभाव है, जिसका कारण महिलाओं के नामांकन कम होने में भी दिखाई पड़ता है।

भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने के लिए समाज को महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रही एवं पितृसत्तात्मक व्यवहार को बदलना होगा। महिलाओं में राजनीतिक चेतना के विकास में राजनीतिक दलों को भी प्रयास करने होंगे और 106वां संविधान संशोधन अधिनियम 2023 (नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023) को शीघ्रता से लागू करने के उपबंध करने चाहिए। साथ ही देश में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता के लिए समावेशी और संवेदनशील नीतियों के निर्माण और प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची :

1. District Administration Agra. (2025). Constituencies. Government of Uttar Pradesh. <https://agra.nic.in/constituencies/>
2. Election Commission of India. (2022, May 25). Uttar Pradesh general legislative election 2022. Election Commission of India. <https://eci.gov.in/files/file/14145-uttar-pradesh-general-legislative-election-2022/>
3. Election Commission of India. (2024). Lok Sabha elections 2024: Election results. Election Commission of India. <https://eci.gov.in>
4. Inter-Parliamentary Union. (2025). Women in parliament 1995–2025. <https://www.ipu.org/resources/publications/reports/2025-03/women-in-parliament-1995-2025>
5. Centre for the Study of Developing Societies (CSDS). (1998). *Women's participation in electoral politics in India: Baseline report*. New Delhi: CSDS. https://www.cds.in/uploads/custom_files_new/1529066448_Women%E2%80%99s%20Participation%20in%20Electoral%20Politics%20in%20India.pdf
6. Kishwar, M. (1996). Women and politics: Beyond quotas. *Economic and Political Weekly*, 31(43), 2867–2874.
7. Kusuma, A. (2024). Women in politics in India: An analytical study. *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR)*, 11(1).
8. National Commission for Women. (1998). Baseline report 1998: Women and political participation in India. National Commission for Women.
9. NIAS. (2003). Interim narrative report, Bangalore Gender Studies Unit, 2002–03. National Institute of Advanced Studies.
10. Patel, V. (2023). Women Reservation Act, 2023 and participation of women in the electoral politics of India. *Impact and Policy Research Review (IPRR)*, 2(2), 72–85.

11. Press Information Bureau. (2024, February 9). Largest electorate in the world – 96.88 crores are registered to vote in 2024 General Elections: ECI. <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2005189>
12. Rai, P. (2017). Women's participation in electoral politics in India: Silent feminisation. *South Asia Research*, 37(1), 58–77. <https://doi.org/10.1177/0262728016687529>
13. UP Assembly. (2024). Women members. Uttar Pradesh Legislative Assembly.
14. Varghese, T. (2020). Women's political participation and leadership in India: Examining the challenges. *Public Policy and Administration*, 19(1), 111–125. <https://doi.org/10.5755/j01.ppaa.19.1.25228>
15. World Economic Forum. (2024). Global gender gap report 2024. World Economic Forum. <https://www.weforum.org/reports/global-gender-gap-report-2024>
16. World Economic Forum. (2025). Global gender gap report 2025. <https://www.weforum.org/publications/global-gender-gap-report-2025/digest/>

